जनवरी 2019 मूल्य 15 रुपये

रूपरेखा

सदाचार ~ सद्विचार ~ सत्संस्कार

मानव मंदिर मिशन के सैंतीसवें वार्षिकोत्सव पर विशाल जन-समुदाय के बीच अपना उद्बोधन-प्रवचन करते हुए पूज्य आचार्यश्री रूपचन्द्रजी। उपस्थित जन-समुदाय की कुछ झलकियां (स्थान-जैन आश्रम, मानव मंदिर परिसर, नई दिल्ली)

संयोजना : साध्वी कनकलता, साध्वी वसुमती

परामर्शक :
श्रीमती मंजुबाई जैन

प्रबंध संपादक :
अरुण कुमार पाण्डेय

वार्षिक शुल्क : 150 रुपये

आजीवन शुल्क : 3000 रुपये

प्रकाशक व मुद्रक : **श्री अरुण तिवारी,** मानव मंदिर मिशन ट्रष्ट (रजि.) के.एच.–57 जैन आश्रम, रिंग रोड़, सराय काले खाँ, इंडियन ऑयल पेट्रोल पम्प के पीछे, पो. बो.–3240, नई दिल्ली–110013, आई. जी. प्रिन्टर्स 104 (DSIDC) ओखला फेस–1 से मुद्रित।

संपादिका : श्रीमती निर्मला पुगलिया

इस अंक में

मन को साधने के बाद ही स्वयं को समझने का रास्ता खुलता है

लेकिन उसके पहले अपने मन को समझना पड़ेगा। बिना मन को समझे, न तो जीवन को समझ पाएंगे और न मंत्र को साध पाएंगे। यह अनुभव-सिद्ध है कि मंत्र तभी निष्फल होता है जब मन सधा हुआ नहीं होता है। इसलिए यह कहा जाता है कि मंत्र-दीक्षा के पहले मन को समीक्षा बहुत जरूरी हैं तभी 'हम कौन हैं और कहां है' का जवाब मिल पाएगा। 05

सम्यक्त्व दीक्षा

ज्ञान और साधना के कुछ गुर और नुस्खे ऐसे होते हैं जो गुरु-गम्य ही होते हैं। बिना गुरु के ज्ञान अलभ्य है। जो व्यक्ति देव, गुरु और धर्म के प्रति एकनिष्ठ नहीं होता उसकी वही दशा होती है जो सात मामा के भानजों की होती है। समय पर उनकी रक्षा कोई नहीं कर पाता। श्रद्धा होनी चाहिए- एकनिष्ठ। 09

हंस अकेला

मुनि जी की बात सुन नवजात भाई तनिक भी विचलित नहीं हुए, बोले- 'आपने जो अनुभव किया है, आश्रम की आज की सच्चाई यही है। किन्तु जैसा आपने कहा, श्री मां के बाद अंधेरा है, इस बारे में मेरा कहना है कि आश्रम के जीवन में वह समय नहीं आने वाला। क्योंकि श्री मां न केवल आध्यात्मिक अपितु शारीरिक रूप से भी हमारे बीच सदैव विद्यमान रहेंगी। और वह रहेंगी तो रोशनी भी आश्रम के जीवन में सदैव रहेंगी। इसलिए अंधेरे के आगमन का प्रश्न ही नहीं उठता।' 12

घर व ऑफिस में सकारात्मक ऊर्जा के लिए वास्तु उपाय

घर में सुबह-शाम रोज दीया और अगरबत्ती जलाएं। इससे बुरी शक्तियों दूर होंगी और घर में शुद्धता का संचार होगा। आप समुद्री नमक युक्त पानी से स्नान कर सकते हैं, जो आपके शरीर से नकारात्मक ऊर्जा और विचारों को मुक्त कर देगा। 16

महासती साध्वी मंजुलाश्रीजी

साध्वी समताश्रीजी

श्रीमान मनोज तिवारी

श्रीमती ताजदार बाबर

योगी अरूण जी

श्रीमान प्रवीन कुमार

श्रीमती दर्शना जाटव

श्रीमती कीर्ति काले

श्रीमान युगराज जी जैन

श्रीमान सोहनलाल खजांची जी

श्रीमती मंगला कोहली

सुश्री तरला बेन दोसी

श्रीमान महेन्द्र सिहं जी डागा

श्रीमान रिखबचन्द जी जैन

श्रीमान महावीर प्रसादजी

श्रीमान संपतराय चौधरी

श्रीमती प्रोमिल मेहता

श्रीमान स्वदेशपाल जी

डॉ. पूरन चन्द्र

श्रीमान सलेखचन्द्रजी कागजी

-मानव मंदिर मिशन के वार्षिकोत्सव में देश विदेश से पधारे विशिष्ट-जन अपने विचार रखते हुए एवं मानव मंदिर गुरूकुल के बच्चे अंगवस्त्रम् द्वारा सम्मान करते हुए। मानव मंदिर परिसर, नई दिल्ली।

-मानव मंदिर मिशन के वार्षिकोत्सव में सांस्कृतिक व योग की अद्भुत प्रस्तुति देते हुए गुरूकुल के छात्र व छात्राएं (मानव मंदिर मिशन परिसर, नई दिल्ली)।

पूज्य आचार्य रूपचन्द्र जी

डॉ. रामदरश मिश्र

डॉ. विश्वनाथ त्रिपाठी

डॉ. गंगा प्रसाद विमल

डॉ. गौरी शंकर रैना

प्रो. फूलचन्द मानव

श्री अरूण योगी

डॉ. विनीता गुप्ता

श्री कुमार अनुपम

श्री विष्णु सक्सेना

श्री बृजेन्द्र त्रिपाठी

श्री संपतराय चौधरी

श्री बेबाक जौनपुरी

श्री सुरेन्द्र सिंगला

श्री वेदप्रकाश (वेद)

डॉ. कमल कुमार

पूज्य गुरूदेव आचार्यश्री रूपचन्द्र का नवीन काव्य संग्रह ''केवल तुम नहीं हो!'' पर साहित्य अकादेमी, रवींद्र भवन, नई दिल्ली में आयोजित समीक्षा गोष्ठी में देश के मूर्धन्य विद्वान अपने-अपने विचार प्रकट करते हुए।

-आचार्य सुशील मुनि आश्रम, डिफेंस कोलोनी, नई दिल्ली के ध्वज-परिवर्तन उत्सव में भाग लेते हुए पूज्य गुरुदेव आचार्यश्री रूपचन्द्रजी महाराज। साथ में हैं अन्य संत-गण व समाज के विशिष्ट जन।

-श्रीमती मंगली बाईजी तथा मौन सेवाभावी सुपुत्र श्री हंसराज बुच्चा परिवार पूज्य गुरुदेव आचार्यश्री रूपचन्द्रजी महाराज से आशीर्वाद प्राप्त करते हुए।

-श्री प्रकाशजी दीपक भंसाली के आवास पर आयोजित कार्यक्रम में श्रावक-गण पूज्य गुरुदेव से आशीर्वाद प्राप्त करते हुए। सूरत, गुजरात।

-पूज्य गुरुदेव आचार्यश्री रूपचन्द्र जी महाराज का शालार्पण द्वारा सम्मान करते हुए श्री गुलाबचन्दजी बरडिया। साथ में हैं साध्वी कनकलता जी तथा श्री अरूण योगी।

-नव वर्ष के एक कार्यक्रम में निदेशक मंडल के मध्य श्री अरुण योगी को सम्मानित करते हुए कृभको के मैनेजिंग डारेक्टर श्री एन. संबासिवा राव। कृभको मुख्यालय, कृभको भवन, नोएडा (उ.प्र.)।

-विज्ञान और दर्शन के अन्तरसम्बंध पर चर्चा के पश्चात् फोटो सेशन का एक दृश्य।मानव मंदिर परिसर, नई दिल्ली।

संत-वाणी

मर जाऊँ माँगूं नहीं, अपने तन के काज।
परमारथ हित मांगता, मनै न आवे लाज।।

बोध-कथा

महात्मा ने दी राजा को सीख

एक सिद्ध और विवेकशील महात्मा थे। एक बार उन्हें जमीन पर पड़ा हुआ एक पैसा मिला। महात्मा ने उसे उठा लिया। वे सोचने लगे-भिक्षा में मुझे भोजन तो मिल जाता है, फिर मैंने यह पैसा क्यों उठा लिया? उन्होंने निश्चय किया कि यह पैसा वह सबसे दरिद्र व्यक्ति को दान कर देंगे। महात्मा दरिद्र की खोज में घूमते रहे, परन्तु उन्हें ऐसा कोई व्यक्ति नहीं मिला।

एक दिन महात्मा जी घूमते-घूमते एक राज्य की राजधानी पहुंचे। उन्होंने देखा कि राजमार्ग पर राजा के साथ अस्त्र-शस्त्रों से सुसज्जित एक विशाल सेना आ रही थी। राजा महात्मा को पहचानता था। राजा ने हाथी से उतरकर महात्मा को प्रणाम किया। महात्मा ने कहा- 'राजन! आप अपना हाथ आगे करें।' फिर उन्होंने अपनी झोली में से वह पैसा निकालकर राजा के हाथ पर रख दिया। राजा ने आश्चर्यचकित होकर महात्मा से पूछा- 'महाराज! यह क्या है?' महात्मा ने उत्तर दिया, मैं इस पैसे को सबसे निर्धन

व्यक्ति को दान करना चाहता था और मेरे विचार में वह निर्धन व्यक्ति तुम हो।'

राजा ने विनम्रतापूर्वक कहा- 'महाराज! आपकी कृपा व आशीर्वाद से मेरे कोष में हीरे-जवाहरातों का भरपूर भंडार है।' महात्मा ने उत्तर दिया, 'राजन! फिर भी तुम बहुत गरीब हो। यदि तुम्हारे खजाने में अथाह धन-सम्पत्ति है तो फिर इतनी बड़ी सेना लेकर आक्रमण करने क्यों जा रहे हो? क्या तुमने सोचा कि युद्ध में कितने लोगों को अपने प्राणों से हाथ धोना पड़ेगा। यह सब क्यों? मात्र राज्य विस्तार, अहंकार तुष्टि व धन प्राप्ति के लिये। बताओ, तुम से बड़ा दरिद्र कौन हो सकता है।

महात्मा की बातें सुन कर राजा लज्जित हुआ। उसने महात्मा से क्षमा मांगी व अपनी सेना को लौटने का आदेश दिया। राजा मुट्ठी में बंद सिक्के को बार-बार देख रहा था। बिना युद्ध किये लौटने के बाद भी राजा को ऐसा प्रतीत हो रहा था मानो वह अनमोल रत्न जीतकर लौट रहा हो।

कविता

❍ आचार्य रूपचन्द

सदा धर्म ने ही नर को आज़ाद किया है,
और उसी ने उजड़े लोगों को आबाद किया है,
किन्तु न माफ करेगा आज ज़माना उस धार्मिक को
जिसने स्वार्थ साधने लाखों को बर्बाद किया है।

अस्तित्व एक ही है, समझें

एक बच्चा पैदा हुआ, तो हम एक छोर देखते हैं कि बच्चा पैदा हुआ। एक बूढ़ा मरा, तो हम एक छोर देखते हैं कि एक बूढ़ा मरा, लेकिन मरना और जन्मना एक ही प्रक्रिया के हिस्से हैं, यह हम कभी नहीं देखते।

हम छोर देखते हैं- प्रासेस नहीं, प्रक्रिया नहीं, जब कि वास्तविक चीज प्रक्रिया है। छोर तो प्रक्रिया के अंग मात्र हैं।

हमारी आंख केवल छोर को देखती है। शुरू देखती है, अन्त देखती है, मध्य नहीं देखती और मध्य ही महत्वपूर्ण है। मध्य से ही दोनों जुड़े हैं। बच्चा पैदा हुआ, यह एक प्रक्रिया है। पैदा होना और मरना एक प्रक्रिया है। जीना एक प्रक्रिया है। ये तीनों प्रक्रियायें हैं, एक ही धारा के हिस्से हैं।

इसे हम ऐसा समझें कि बच्चा जिस दिन पैदा हुआ, उसी दिन मरना भी शुरू हो गया। उसी दिन जरा ने उसे पकड़ लिया। उसी दिन वह जीर्ण होना शुरू हो गया, उसी दिन वह बूढ़ा होना शुरू हो गया। फूल खिला और कुम्हलाना शुरू हो गया। खिलना और कुम्हलाना हमारे लिए दो चीजें हैं। फूल के लिए एक ही प्रक्रिया है।

अगर हम जीवन को देखें, तो वहां चीजें टूटी हुई नहीं हैं, वहां सब जुड़ा हुआ है, सब संयुक्त है। जब आप सुखी हुए, तभी दुख आना शुरू हो गया। कब आप दुखी हुए,

तभी सुख आना शुरू हो गया। जब आप बीमार हुए, तभी स्वास्थ्य की शुरूआत हो गई। जब आप स्वस्थ हुए, तभी बीमारी की शुरूआत हो गयी, लेकिन हम तोड़कर देखते हैं। तोड़कर देखने में आसानी होती है। अगर हम स्वास्थ्य और बीमारी को एक ही प्रक्रिया समझें, तो वासना के लिए बड़ी कठिनाई हो जायेगी।

अगर हम जन्म और मृत्यु को एक ही बात समझें, तो कामना किसकी करेंगें? चाहेंगे किसे? हम तोड़ लेते है दो में। जो सुखद है, उसे अलग कर देते हैं, जो दुखद है, उसे अलग कर देते हैं- मन में, जगत् में तो अलग हो नहीं सकता, अस्तित्व तो एक है। विचार में अलग कर लेते हैं। फिर हमें आसानी हो जाती है।

जीवन को हम चाहते हैं, मृत्यु को हम नहीं चाहते। सुख को हम चाहते है, दुख को हम नहीं चाहते और यही मनुष्य की बड़ी से बड़ी भूल है, क्योंकि जिसे हम चाहते हैं और जिसे हम नहीं चाहते वे एक ही चीज के दो हिस्से हैं। इसलिए हम जिसे चाहते हैं, उसके कारण ही हम उसे निमन्त्रण देते हैं, जिसे हम नहीं चाहते हैं। उसे हम हटाते हैं मकान के बाहर और हम उसके साथ उसी भी विदा कर देते हैं, जिसे हम चाहते हैं।

प्रस्तुति : निर्मला पुगलिया

पूज्य गुरुदेव के प्रवचन-सारांश

❍ रुचि आनंद

मन को साधने के बाद ही स्वयं को समझने का रास्ता खुलता है

एक आदमी सड़क पर लुढ़का हुआ लगातार बुदबुदा रहा था। अच्छे कपड़ों में था, पढ़ा-लिखा लग रहा था। आते-जाते लोगों में से कोई उसे नशेड़ी तो कोई पागल करार दे रहा था। किसी ने टिप्पणी की कि एक्टिंग कर रहा है तो दूसरे ने कहा कि लगता है माथे में चोट-वोट लगी है, इसलिए याददाश्त चली गई होगी। मुझे आश्चर्य हुआ कि हर कोई अपना-अपना संदेह रख रहा है, लेकिन कोई असलियत जानने की कोशिश नहीं कर रहा है। वह बार-बार खुद से मानो सवाल कर रहा था कि 'मैं कौन हूं और कहां हूं।' बाद में मालूम हुआ कि उसे किसी ने नशा सुंघाकर उसका सामान लूट लिया। वह अर्ध-बेहोशी जैसी हालत में पहुंच गया था।

उस आदमी का इस हाल तक पहुंचना, एक पक्ष है। बड़ा सवाल यह है कि क्या हम होश में रहते हुए भी कभी इस निष्कर्ष पर पहुंच पाएं हैं कि 'हम कहां हैं और कौन हैं?' हमारे जीवन की इससे बड़ी विसंगति और क्या हो सकती है कि हम खुद को नहीं जान पाए और न कभी जानने की कोशिश ही की। जीना, कमाना-खाना, परिवार की चिंता

करना ओर सबको पीछे कर आगे बढ़ने का प्रयास करना- यही जीवन का लक्ष्य बन गया है। इससे आगे बढ़े तो मंदिरों, गिरजाघरों, तीर्थस्थलों में जाकर भगवान को खोजने ओर अपने लिए सुख की मांग करने का काम समझ में आता है। हम भूल जाते हैं कि इससे इतर भी एक बड़ी जिंदगी है।

यह एक दुःखद आश्चर्य है कि आदमी को भटकना पसंद है, लेकिन अपने अंदर उतरना मंजूर नहीं है, क्योंकि इससे अपने अज्ञान का पता चल जाएगा। इसलिए उसके पहले ही हम शास्त्रों और मंत्रों को अपना ठिकाना बना लेते हैं और उसको रट कर खुद की कमजोरियों को छुपा लेते हैं। यह ऐसा विराधाभास है जो हमें मनुष्य हो जाने और अपनी सही पहचान बनाने से रोकता है। मंत्र मनीषियों के अनुभवों से निकला एक सूत्र है। यह अनुभव हम सभी अपनी तरह से ले सकते हैं। हम अपने लिए अपना जीवन-मंत्र बना सकते हैं। यह आत्म-साधना से ही संभव है, जो अभ्यास खोजती है। अभ्यास का मतलब है बार-बार प्रयास। इसके अभाव में प्रतिभा-संपन्न व्यक्ति भी अपने विषय में पिछड़ जाते हैं और कमजोर प्रतिभा वाले इसके बल पर बड़ी-बड़ी योग्यताएं हासिल कर लेते हैं। आपके अपने मंत्र से जो रास्ता मिलेगा, वह आपका अपना होगा।

लेकिन उसके पहले अपने मन को समझना पड़ेगा। बिना मन को समझे, न तो जीवन को समझ पाएंगे और न मंत्र को साध पाएंगे। यह अनुभव-सिद्ध है कि मंत्र तभी निष्फल

होता है जब मन सधा हुआ नहीं होता है। इसलिए यह कहा जाता है कि मंत्र-दीक्षा के पहले मन को समीक्षा बहुत जरूरी हैं तभी 'हम कौन हैं और कहां है' का जवाब मिल पाएगा।

प्रेम की नजर से दुनिया देखें तो हर संकट का समाधान मिलेगा

एक सुखी संपन्न सज्जन मिलने आए। लेकिन उनके चेहरे का रंग उड़ा हुआ था। आते ही बिफर पड़े, 'ऐसा मुश्किल समय मैंने अपने जीवन में पहली बार देख रहा हूं। एक डर समा गया है कि भविष्य क्या होगा? इसलिए आपके पास आया हूं। कोई रास्ता बताइए।' मैंने जब उनसे जानना चाहा कि यह मुश्किल समय सिर्फ आपके हिस्से ही है या और भी किसी के सामने है? उन्होंने जो जवाब दिया, वह चौंकाने वाला था। कहा, 'सबके सामने है, लेकिन मुझे बाकी किसी से क्या मतलब?'

इस तरह के विचार सिर्फ उनके ही नहीं हैं। हर आदमी अकेले-अकेले उसी तरह की सोच के साथ चल रहा है। वह बस रटता रहता है कि उसके जैसा दुःखी कोई और नहीं और उसका साथ देने वाला भी कोई नहीं है। मतलब, उसे खुशी चाहिए तो सिर्फ अपने लिए। यही मानसिकता है जो हमें सामूहिकता से काटती है और बेहतर आदमी बनने से रोकती है। इसका असर पूरे समाज पर होता है। अगर सबकी समस्या एक तरह की है तो अलग-अलग समाधान क्यों चाहिए? साथ मिलकर उसका निराकरण तो किया ही जा सकता है।

यह मुश्किल समय हमेशा से रहा है। हर पल इसे कोसा जाता है। रामायण काल हो या महाभारत का, उस समय बड़े युद्ध हुए। राम को भी संकट से गुजरना पड़ा। कृष्ण को भी कुरुक्षेत्र के मैदान में उतरना पड़ा। उस समय को किस रूप में याद किया जाना चाहिए? राम और कृष्ण कहीं रोने के बजाय उस परिस्थिति को बदलने के लिए सामने आ गए। बुद्ध, महावीर और गांधी भी समाज को स्वस्थ करने, उसकी आंखें खोलने तथा मनुष्यता पर छाए संकटों का निराकरण करने के लिए निकल पड़े। अपने साथ लोगों को जोड़ा ओर समझाने का प्रयास किया कि कोई भी बदलाव पहले खुद से ही शुरू करना पड़ता है।

यह तय मानिए कि जिस दिन आपको समाज का दुख अपना लगने लगेगा, उसी दिन से आपके अंदर एक मनुष्य का जन्म होने लगेगा। तब आप अपने लिए नहीं सबके लिए जीना शुरू कर देंगे। तब दूसरों को सुख भी ईर्ष्याग्रस्त नहीं करेगा। इसे आजमाना चाहिए। हमारे ऋषि-मुनियों ने इस मन को विराट बनाने के सूत्र दिए हैं। महावीर ने यहां तक कहा है, 'परस्पर उपग्रह, परस्पर उपकार और प्रेमपूर्ण सहयोग ही जीवन का लक्षण है।' अगर भीतर प्रेम नहीं बह रहा है तो हमारा पूरा अस्तित्व ही गड़बड़ा जाएगा। इसलिए पहले हम अपने मन से जुड़ें और फिर उस मन को समाज के बीच ले जाएं। दुःख ही नहीं, सुख को भी साझा करें। गांधीजी ने यही प्रयोग किया और सबका विश्वास जीत लिया। उन्होंने इस बात की चिंता की कि समाज का अंतिम आदमी तनकर खड़ा हो जाए और सबके साथ चलने लगे।

सम्यक्त्व दीक्षा

○ संघ प्रवर्तिनी साध्वी मंजुलाश्री

ज्ञान, दर्शन और चारित्र की सम्यक् आराधना वही कर सकता है, जिसको सच्चे देव, गुरु और धर्म का यथार्थ मार्गदर्शन प्राप्त हो। सच्चे देव, गुरु और धर्म की स्वीकृति के लिए स्वयं की समझ का विकसित होना अपेक्षित है।

हर व्यक्ति का जीवन अपने आप में अधूरा है। वह जन्म से लेकर मृत्यु-पर्यन्त कुछ-न-कुछ सीखता रहता है। मनुष्य पूर्णता अर्जित करने में कई व्यक्तियों का ऋणि होता है। जन्मते ही वह मां से बहुत-सी जीवनोपयोगी बातें सीखता है। तदनन्तर अध्यापक उसके जीवन का सर्वोत्कृष्ट निर्णायक होता है। सहपाठी, साथी, पारिवारिक जनों के अतिरिक्त पशु-पक्षी तक उसके ज्ञानार्जन में सहायक होते हैं।

भौतिक-जीवन के विकास में जो सहयोगी बनते हैं उनका भी अमिट उपकार होता है, फिर आध्यात्मिक जीवन के उत्प्रेरक देव, गुरू, धर्म का तो कहना ही क्या? देव, गुरु, धर्म का विश्लेषण कई दृष्टियों से अपेक्षित है।

देव, गुरु, धर्म का प्रकार, उनका स्वरूप, उनका कार्य और जीवन में उनकी उपयोगिता-

देव-प्रत्येक मनुष्य की अपनी एक अन्तिम मंजिल होती है। उस मंजिल का निर्णय करने के लिए उत्कृष्ट आदर्श बिन्दु चाहिए- जो उस मंजिल तक पहुंचने के लिए सहज सरल पथ का निर्माण तो करे ही, साथ-साथ स्वयं उसके लिए आदर्श और आराध्य भी बने। 'अर्हन् देवः' देव अर्थात्, अतिशायी आत्मा, आराध्य पुरुष, आदर्श पुरुष, अनुकरणीय व्यक्ति।

देव दो प्रकार के होते हैं- लौकिक देव और लोकोत्तर देव। लौकिक देव लौकिक समृद्धि के प्रतीक है। लोकोत्तर देव लोकोत्तर समृद्धि के प्रतीक हैं।

लौकिक देवता होते हैं अपने-अपने कुलदेव। जैसे- माताजी, भैरोंजी, हनुमानजी आदि। इनका स्वरूप होता है शक्तिमत्ता और इनका कार्य होता है समृद्धि और स्वास्थ्य की प्राप्ति में सहयोग करना।

लोकोत्तर देव सबके एक नहीं होते। किसी ने बुद्ध को देव मान रखा है तो किसी ने ब्रह्मा को देव की संज्ञा दे रखी है। किसी का आदर्श पुरुष शंकर और शिव है तो किसी का कृष्ण, राम और महेश। कोई ईशु को, कोई मुहम्मद को तो कोई महावीर को अपना आराध्य-पुरुष मानते हैं। किसी को भी मानें, लोकोत्तर देव का स्वरूप है वीतरागता। जो रोग-द्वेष विजेता है, बंधन-मुक्ति रूप मंजिल को जिसने पा लिया तथा जो ऐसे पथ का निर्माण करता है जिसका

अनुसरण करने वाला मुक्ति-गामी हो, वही देव सच्चा देव है। संक्षेप में देव का स्वरूप है- वीतरागता। देव का कार्य है- बन्धन-मुक्ति के पथ का निर्माण। देव जीवन-विकास में परम आवश्यक है। आन्तरिक समृद्धि को प्राप्त करने के लिए आदर्श रूप में प्रेरक बनते हैं, ऐसे देव वीतराग प्रभु अरिहन्त भगवान् होते है।

एक निश्चित मंजिल और उस तक जाने का निर्विकल्प पथ होने पर भी जब तक कोई मार्गदर्शन नहीं मिलता, तब तक मंजिल उपलब्ध नहीं हो सकती।

'निर्ग्रन्थो-गुरुः'- गुरु अर्थात् ग्रन्थियों से मुक्त-मार्गदर्शक। गुरु भी दो प्रकार के होते हैं- लौकिक गुरु और लोकोत्तर गुरु।

जो लौकिक सिद्धियों व विद्याओं का मार्ग दिखाता है वह लौकिक गुरु होता है। माता-पिता, गुरुजन तथा शिक्षक आदि को लौकिक गुरु कहा जाता है, क्योंकि वे लौकिक जीवन जीने की कला व विद्या सिखाते हैं।

लोकोत्तर जीवन की कला सिखाने वाले लोकोत्तर गुरु होते हैं। लोकोत्तर गुरु का स्वरूप है निर्ग्रन्थता। 'पंच महाव्रतधरः साधु गुरूः। बन्धन-मुक्ति के उद्देश्य में सतत जागरूक, कथनी-करनी की एकरूपता- यह सच्चे गुरु की पहचान है। कथनी-करनी की विविधता जहां होती है, वहां गुरुजनोचित श्रद्धा-भाव नहीं रह पाता और इसके अभाव में

उनके द्वारा बताये गए मार्ग का अनुसरण कठिन है।

जैसे किसी व्यक्ति को दिल्ली आना है। वह सड़क पर खड़े व्यक्ति से पूछता है- आप कहां जाएंगे? व्यक्ति सीमित शब्दों में जवाब देता है कि दिल्ली जाऊंगा। तब आगन्तुक व्यक्ति कहता है कि मुझे भी दिल्ली आना है, मार्ग बताएं। वह उसको संकेत द्वारा एक ओर का मार्ग बताकर स्वयं दूसरी ओर चल पड़ता है। इससे प्रश्नकर्त्ता बड़े ही असमंजस में पड़ जाता है। सोचता है, जरूर कुछ न कुछ दाल में काला है और उसके प्रति अनास्था के भाव उत्पन्न हो जाते हैं। यही बात लोकोत्तर गुरु के बारे में हैं।

जो औरों को तो बंधन-मुक्ति के लिए त्याग, तप, संयम, सत्य और पवित्रता का रास्ता बताते हैं, लेकिन स्वयं उस पर अमल नहीं कर सिर्फ दूसरों को ही प्रेरित करते रहते हैं। उन पर किसका विश्वास जम सकता है? गुरु का कर्तव्य है स्वयं बन्धन-मुक्ति के मार्ग का पूर्णरूपेण अनुसरण करते हुए ओरों का पथ-पदर्शक बने।

हर जीवन में सच्चे गुरु की अत्यन्त आवश्यकता होती है। क्योंकि यथार्थ पथ-पदर्शक के अभाव में जानकार से जानकार व्यक्ति भी भटक सकता है और ऐसे भटके हुए व्यक्ति को ब्रह्मा भी ठिकाने नहीं लगा सकते।

ज्ञान और साधना के कुछ गुर और नुस्खे ऐसे होते हैं जो गुरु-गम्य ही होते हैं। बिना गुरु के ज्ञान अलभ्य है। जो व्यक्ति देव, गुरु और धर्म के प्रति एकनिष्ठ नहीं होता

उसकी वही दशा होती है जो सात मामा के भानजों की होती है। समय पर उनकी रक्षा कोई नहीं कर पाता। श्रद्धा होनी चाहिए- एकनिष्ठ।

एकनिष्ठ और विकीर्ण श्रद्धा को एक छोटे से उदाहरण से समझा जा सकता है। उदाहरण वैसे उदाहरण ही होता है, लेकिन शिक्षाप्रद है।

एक हिन्दू और एक मुसलमान दोनों नदी पार कर रहे थे। अधबीच में बाढ़ आ गई। मुसलमान ने रक्षा के लिए अल्लाह को पुकारा और वह पार पहुंच गया। हिन्दू ने कृष्ण को पुकारा। फिर सोचा कि कृष्ण तो सुनते ही नहीं, तत्काल राम-राम पुकार उठा। कृष्ण ज्यों ही आए, देखा कि यह तो राम को पुकार राह है, पुनः लौट गए। राम ज्यों ही आने लगे, वह शिव-शिव चिल्लाने लगा। इस बीच राम आए और शिव की रटन देखकर लौट गए। शिव पुकार सुनकर आने लगे तो वह हनुमान-हनुमान पुकारने लगा। शिव भी लौट गए। और न उधर हनुमान आए। इस तरह वह मझधार में ही डूब गया।

यही दशा उन लोगों की होती है जो एकनिष्ठ न होकर डांवाडोल रहते हैं।

जीवन

मिलता है इक बार ही, जीवन का उपहार।
भाग्यशाली भोगता, यह सुंदर संसार।।

हंस अकेला

{उपन्यास-शैली में आचार्यश्री रूपचन्द्र की जीवन-गाथा}

○ डॉ. विनीता गुप्ता

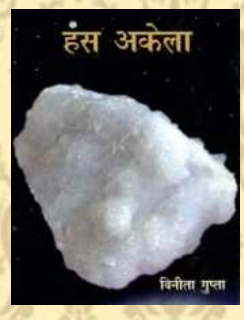

<u>गतांक से आगे-</u>

अगले दिन अरविन्द आश्रम दर्शन का कार्यक्रम था। आश्रम के लिए प्रस्थान होना ही था कि सूचना मिली- पूरे धर्म-संघ के साथ श्री मां का मिलन संभव नहीं है। उन्होंने आचार्यश्री तुलसी तथा मुनि रूपचन्द्र जी के साथ मिलन की स्वीकृति दी है। इस बात से मुनि नथमल जी के खेमे में तीव्र प्रतिक्रिया हुई। तमाम सवालों का झंझावात-सा खड़ा हो गया। श्री मां की ओर से मुनि रूपचन्द्र का नाम आया तो आया कैसे? इसके लिए किसने प्रयास किया? फोटो किसने भेजा? यह सब कैसे हुआ? आदि-आदि। मुनि नथमल जी ने आचार्यश्री के सामने ही जैसे मुनि रूपचन्द्र को अदालत में खड़ा कर लिया हो। बाद में खीझ के चलते यह घटना 'मदर का गदर' के नाम से प्रचारित हुई। मुनि जी ने स्थिति स्पष्ट की तो प्रश्न स्वयं निरस्त हो गए।

अगले दिन अरविन्द आश्रम की ओर प्रस्थान किया। पूरा दृश्य मुनि जी के मानस पटल पर अंकित हो गया। समुद्र के किनारे मीलों में फैला हुआ श्री अरविंद आश्रम।

उसमें श्री मां का निवास स्थान योगिराज श्री अरविन्द की समाधि भूमि के निकट ही था। गुरू-शिष्य दोनों सबसे पहले समाधि-स्थल पर पहुँचे। श्रद्धालुओं के लिए वह समाधि भूमि किसी तीर्थ स्थल से कम नहीं थी। पूरा वातावरण फूलों और अगरबत्ती से महक रहा था। भक्त-जन आ-जा रहे थे। वे फूल चढ़ाते और फिर वहीं अपना शीश नवा कर ध्यान-मग्न हो जाते। इतने में श्री मां के मिलन की निश्चित घड़ी आ गई। नवजात भाई और आचार्यश्री के साथ मुनि जी श्री मां के आवास-स्थल की ओर बढ़े। आवास-स्थल पर एक निर्धारित स्थान पर मुनि जी को रोक दिया गया और नवजात भाई के साथ आचार्यश्री भीतर चले गए। लगभग पन्द्रह मिनट बाद मुनि जी को भी भीतर बुला लिया गया।

अन्दर प्रवेश पाते ही मुनि जी ने देखा- एक सिहांसननुमा कुर्सी पर श्री मां विराजमान हैं। नब्बे वर्ष की आयु होने के बावजूद चेहरे पर कहीं झुर्रियों का नामो-निशान नहीं, अद्‌भुत शांति और कांति का वास था मुखमंडल पर। देह में सहज स्फूर्ति। मुनि जी ने उनको देखा और उन्होंने मुनि जी को देखा। आचार्यश्री की उपस्थिति के कारण बोलने का कोई अवकाश था नहीं। लगभग बीस मिनट तक मुनि जी उन्हें देखते ही रहे। श्री मां ने तो जैसे दिये की तरह ज्योतित अपनी बड़ी-बड़ी आँखें मुनि जी के चेहरे पर गड़ा दीं। इतनी बड़ी-बड़ी आँखें, बिना किसी

झपकन के अपलक दृष्टि। मानो वे आँखें नहीं, दो चमकते हुए दीपक हों। ऐसी सम्मोहन भरी आँखें मुनि जी ने जीवन में पहले कभी नहीं देखी थीं। मुनि जी के लिए अद्‌भुत अनुभव था। ऐसा प्रतीत हो रहा था जैसे वे आँखें विद्युत तरंगों की तरह देह के आर-पार निकल रही हैं। उस पूरी मिलन-अवधि में न मुनि जी के मुख से एक शब्द निकला और न ही मां ने कुछ कहा। किन्तु आँखों ही आँखों में उन्होंने वह सब कुछ कह दिया जो उन्हें कहना था। सब कुछ मुनि जी ने ग्रहण किया था। मुनि जी अद्‌भुत रोमांच से भरे हुए थे। लगभग बीस मिनट बाद श्री मां को प्रणाम कर बाहर आ गए। अभी भी मुँह से एक शब्द नहीं निकल रहा था। जैसे-तैसे नवजात भाई को 'धन्यवाद' कहा और फिर भीतर से कुछ पंक्तियां फूटीं-

लगता जिसको जहां कहीं भी
कोई पीछा किए आ रहा,
उन नजरों का वह कायल है
या उन नजरों से घायल है।

उस दिन का अधिकांश समय मुनि जी ने अरविन्द आश्रम में ही बिताया। आश्रम का विशाल पुस्तकालय, अंतर्‌राष्ट्रीय शिक्षा केन्द्र। विश्व परिवार की कल्पना संजोये औरोविल का निदेशालय। ध्यान सभागार। अतिथि भवन आदि स्थानों का अवलोकन किया। किन्तु हर पल ऐसा

लगता रहा, मानो श्री मां की अपलक दृष्टि हर जगह पीछा कर रही है। आश्रम के वातावरण की सजीवता का कारण श्री मां की साधना थी। मुनि जी महसूस कर रहे थे कि यद्यपि आश्रम की विविध आयामी प्रवृत्तियों से जुड़े लोग उपनी-अपनी विधाओं में पारंगत हैं। किन्तु अध्यात्म की दृष्टि से श्री मां के आसपास भी खड़े हो सकें, ऐसा नहीं था।

सायंकाल नवजात भाई के आवास पर जाना हुआ। चलते-चलते नवजात भाई ने पूछा- 'आप श्री मां से मिले हैं, आश्रम का अवलोकन भी किया है। कुल मिलाकर आपकी क्या प्रतिक्रिया है? मैं जानना चाहता हूं।' मुनि जी बोले- 'नवजात जी, श्री मां आध्यात्मिक शक्ति हैं, इसमें कोई संदेह नहीं है। उनकी शारीरिक उपस्थिति भले ही एक भवन तक सीमित है, किन्तु आध्यात्मिक उपस्थिति आश्रम में पग-पग पर अनुभव की जा सकती है। कहना चाहिए कि आज आश्रम में जो रोशनी है, वह सिर्फ श्री मां हैं, किन्तु...' कहते-कहते मौन हो गए मुनि जी।

'आपने वाक्य अधूरा क्यों छोड़ा? आप जो भी अनुभव कर रहे हैं, साफ-साफ बताएं।' नवजात भाई बोले। 'दूसरा अनुभव प्रिय नहीं है, इसलिए मैं मौन हो गया। आप यदि यह जानना चाहते हैं तो बता देता हूं। पता नहीं क्यों, श्री मां के बाद मुझे यहां अंधेरा ही अंधेरा नजर आ रहा है। ऐसा लगता है, यह सारी रोशनी श्री मां के साथ ही विदा ले

लेगी।'- जैसे मुनि जी किसी भाव-समाधि में रहे हों।

मुनि जी की बात सुन नवजात भाई तनिक भी विचलित नहीं हुए, बोले- 'आपने जो अनुभव किया है, आश्रम की आज की सच्चाई यही है। किन्तु जैसा आपने कहा, श्री मां के बाद अंधेरा है, इस बारे में मेरा कहना है कि आश्रम के जीवन में वह समय नहीं आने वाला। क्योंकि श्री मां न केवल आध्यात्मिक अपितु शारीरिक रूप से भी हमारे बीच सदैव विद्यमान रहेंगी। और वह रहेंगी तो रोशनी भी आश्रम के जीवन में सदैव रहेंगी। इसलिए अंधेरे के आगमन का प्रश्न ही नहीं उठता।'

'यह विश्वास श्री मां के प्रति आपकी अटूट श्रद्धा की उपज है'- मुनि जी ने आगे कहा- 'मैं इस पर कोई टिप्पणी करके आपका मन नहीं दुखाना चाहता। यह अवश्य कहना चाहूंगा कि श्री मां की अनुपस्थिति में इस मशाल को थामने वाले हाथ नजर नहीं आ रहे।'

नवजात भाई ने बात का जबाब देते हुए कहा, 'यदि श्री मां को जाना होगा तो उससे पहले वे अपनी आध्यात्मिक संपदा का शक्तिपात किसी में करके ही जाएंगी, जैसा कि योगिराज अरविंद अपनी सारी लब्धियां और उपलब्धियां श्री मां में नियोजित करके भगवद्लीन हुए थे।'

नवजात भाई की श्रद्धा अटूट थी। नवजात भाई से आश्रम की साधना-व्यवस्था, श्री मां के जीवन तथा योग

साधना और जैन मुनि की आचार चर्या के बारे में विस्तार से चर्चा हुई। वार्त्ता के अंत में मुनि जी ने कहा- 'श्री मां के साथ हुए मिलन-प्रसंग को मैं अपने जीवन की आध्यात्मिक उपलब्धि मानता हूं। मैं चाहता हूं कि आप मेरी इस अनुभूति को श्री मां तक पहुंचा दें। इसके उत्तर में श्री मां कुछ कहें तो आप मुझे अवश्य बताएं।'

अगले दिन सुबह-सुबह नवजात भाई आए। उनके चेहरे पर अंकित उल्लास को साफ पढ़ा जा सकता था। मुनि जी कुछ कहते, इससे पहले ही नवजात भाई बोले- 'मैंने आपका संवाद श्री मां तक पहुँचा दिया था। श्री मां का संवाद इस पत्र में है।' यह कहते हुए उन्होंने वह पत्र मुनि जी के हाथ में थमा दिया। अंग्रेजी भाषा में पत्र में लिखा था- 'I would be glad to have contacts with you on spiritual level.'- The Mother (आध्यात्मिक भूमिका पर आपके साथ सम्पर्क रखने में मुझे प्रसन्नता होगी- श्री मां) एक वाक्य के इस पत्र में मुनि जी को आनंद से सराबोर कर दिया था। नवजात भाई भी श्री मां द्वारा भेजे गए इस संवाद को महत्त्वपूर्ण मान रहे थे। श्री मां की आध्यात्मिक थाती संभाल मुनि जी आचार्यश्री के काफिले के साथ आगे पदयात्रा पर बढ़ चले।

x x x

पदयात्रा अभियान पांडिचेरी से चिदम्बरम् कुंभकोणम् मदुरै होता हुआ भारत की धरती के अंतिम छोर

कन्याकुमारी तक पहुँचा। वहां से केरल, कोयम्बटूर, उटकमण्ड, मैसूर होते हुए सन् अगले साल का वर्षावास बंगलौर में रहा। चातुर्मास दीपावली का दिन। रात्रि में विशेष जप-पाठ किया। सवेरे लगभग साढ़े चार बजे का समय। जागने के बाद मुनि जी पद्मासन में ध्यान में बैठे। तभी एक विचित्र घटना घटी, अनुभूति हुई। मुनि जी की दृष्टि सामने सूनी दीवार पर टिकी। और कुछ ही झणों में दीवार पर श्री मां की आकृति प्रकट हो गई। एक दम वही शांत सौम्य चेहरा। निर्निमेष आँखें। मुनि जी अवाक्, विमुग्ध!' यह सच है या कोरा स्वप्न। तभी आकृति के होंठ हिले। कुछ शब्द स्पष्ट रूप से कानों में गूँजे- It's time to come and join me. (मेरे साथ जुड़ने का समय आ गया है)। यह वाक्य मुनि जी को दो-तीन बार सुनाई दिया और अंतिम अनुध्वनि के साथ आकृति विलीन हो गई। सामने रह गई दीवार, एकदम सपाट दीवार। सब कुछ चंद सेकिन्डों में घटित हो गया। यह एक स्वप्न था या मनोविभ्रम या श्री मां का योग-शक्ति के माध्यम से मुनि जी के साथ आध्यात्मिक सम्पर्क? कुछ अनुभूतियां शब्दातीत होती हैं। अवर्णनीय होती हैं। इस घटना के बाद हफ्ते भर तक मुनि जी बेचैन रहे। लगातार महसूस होता रहा जैसे कोई अरविंद आश्रम पहुँचने के लिए बार-बार पुकार रहा है।

x x x

मुनि जी के जीवन में ऐसे अलौकिक अनुभव और अध्यात्म-शक्ति से मिलन का यह दूसरा प्रसंग था। आचार्यश्री के काफिले के साथ पाद विहार करते हुए उन्हें अचानक एक साल पहले का प्रसंग याद हो आया, जब वे अध्यात्म पुरुष जे. कृष्णमूर्ति से मिले थे। यही समय था जनवरी-फरवरी। श्री कृष्णमूर्ति के जीवन और व्यक्तित्व के बारे में मुनि जी को काफी कुछ जानने का अवसर मिला था। जो कुछ सुना था, वह गहरी छाप छोड़ता गया मुनि जी के मन पर।

प्राचीन ग्रन्थों के अनुसार कहा जाता रहा था कि भगवान बुद्ध मैत्रेय के रूप में फिर अवतरित होंगे। थियोसोफिकल सोसायटी की संस्थापिका श्रीमती ऐनीबेसेंट ने प्राचीन ग्रन्थों में उल्लिखित भविष्यवाणी केअनुसार प्रभामंडित बालक कृष्णमूर्ति को मैत्रेय अवतार के लिए चुना था। बोधिसत्व मैत्रेय के अवतरण के अनुरूप व्यक्तित्व-निर्माण के लिए बालक कृष्णमूर्ति की शिक्षा-दीक्षा हुई। आर्डर ऑफ स्टार की स्थापना हुई। विश्वभर में उसकी शाखाएं स्थापित हुईं। मैत्रेय अवतार का दिन भी निश्चित कर दिया गया। पूरे विश्व से विशेष रूप से अध्यात्म साधक उस दिन उपस्थित हुए। उन सबकी उपस्थिति में अवतार की घोषणा के समय श्री कृष्णमूर्ति ने जिस अदम्य आत्म-साहस का परिचय दिया, वैसा कोई प्रकाश पुरुष ही कर सकता है। मैत्रेय अवतार की सारी आयोजना को नकारते हुए श्री कृष्णमूर्ति ने कहा-

'धर्म नितांत व्यक्तिगत होता है। वह पूर्णतः आत्मगत होता है। हर व्यक्ति को यह आत्मयात्रा स्वयं तय करनी होती है। इसमें समाज, संस्थान और सम्प्रदाय बिल्कुल अनावश्यक है। उस आत्म-खोज में गुरू और अवतार भी अकिंचित्कर हैं। इसलिए मैं न केवल इस अवतार आयोजना से अपने को अलग करता हूं। अपितु मुझे केन्द्र में रखकर बने हुए ऑर्डर संगठन, ट्रस्ट आदि से भी अपने आपको अलग करता हूं।'

मुनि जी ने इस प्रसंग को पढ़ा तो मन ही मन सोचा कि इतना बड़ा आत्मबल और निस्संग साहस किसी प्रज्ञा-पुरुष में ही संभव है। यश, पद और सम्मानों के लिए संत-समाज की ओछी राजनीति के खेल से वे अब तक भली-भाँति परिचित हो चुके थे। ऐसी स्थितियों में श्री कृष्णमूर्ति ने न केवल अपने नेतृत्व में खड़े किए गए विश्वव्यापी संगठन को नकारा, न केवल करोड़ों के ट्रस्ट से अपने को अलग किया, अपितु अपने लिए होने वाली मैत्रेय अवतार की घोषणा को भी दृढ़ता से अस्वीकार कर दिया।

ऐसे व्यक्ति से मिलने की उत्कंठा मुनि जी के मन में काफी पहले से थी।

पिछले साल के जनवरी-फरवरी में दक्षिण यात्रा के समय सुखद संयोग बना। उस समय मुनि जी बम्बई में थे और संयोग से उन दिनों श्री कृष्णमूर्ति का प्रवास भी बम्बई में था। वे किसी सद्गृहस्थ के घर ठहरे हुए थे। सुश्री इला

जवेरी के माध्यम से उनसे मिलने का समय तय हुआ। निश्चित समय पर मुनि जी वहां पहुँचे। इला जवेरी भी साथ थीं। एक अत्यंत सादगीपूर्ण कमरे में दोनों को बैठाया गया। फर्नीचर के नाम पर कमरे के फर्श पर केवल चटाइयां बिछी थीं। स्वयं श्री कृष्णमूर्ति जैसी विभूति के लिए कोई सोफा, कुर्सी क्या, कोई अलग आसन तक नहीं था। मुनि जी देखकर हतप्रभ रह गए। कहां धर्म जगत का ताम-झाम, प्रदर्शन दिखावा और अहं-मंडित सजावटें और कहां विश्व प्रसिद्ध इस व्यक्ति का सादा-सरल जीवन।

-क्रमशः

अनमोल वचन

-हिंसा 'स्व' के संकुचन से पैदा होती है, जबकि अहिंसा का तात्पर्य है 'स्व' की सार्वभौमिक व्याप्ति। भारतीय परम्परा में 'स्व' की पहचान को ही जीवन का प्रयोजन माना गया है। इस 'स्व' या 'अस्मिता' के कई वृत्त हैं जिनका विस्तार अपनी देह से लेकर अनन्त सृष्टि तक है।

-नन्दकिशोर आचार्य

-केवल वही व्यक्ति सबकी अपेक्षा उत्तम रूप से कार्य करता है, जो पूर्णतया निस्वार्थी है, जिसे न तो धन की लालसा है, न कीर्ति की और न किसी अन्य वस्तु की।

-विवेकानन्द

चुटकुले

(1) डॉक्टर साहब एक व्यक्ति का ऑपरेशन करने जा रहे थे, तभी वह व्यक्ति बोला- डॉ. साहब एक मिनट रूकिये और यह पेन्ट की जेब से बटुआ निकालने लगा।

डॉ. साहब बोले- फीस की चिन्ता क्यों करते हो! ऑपरेशन के बाद ले लूंगा।

व्यक्ति बोला- डॉ. साहब फीस की बात नहीं, मैं तो ऑपरेशन के पहले अपने रूपये गिन रहा था।

(2) एक अधिकारी को शिकार का बड़ा शौक था वे शेर को मारने जंगल चल दिए। शेर कहीं नहीं दिखाई दिया, तो अपने एक साथी के साथ पेड़ के नीचे बैठ गए। तभी न जाने कहां से वास्तव में शेर आ गया। तभी साथी ने अपने दोस्त से कहा- शेर आ गया।

वर्मा जी बोले- कह दो, कल कार्यालय में आ जाए।

(3) मालती (अपनी सहेली पूनम से) तुम्हारी बेटी श्वेता की सगाई हुई एक साल हो गया शादी क्यों नहीं करती?

पूनम (मायूसी में) क्या करूं बहन जी, लड़का वकील है जब भी शादी की तारीख आती है तो कोई न कोई आगे की तारीख बतला देता है।

प्रस्तुति : मनीष

घर व ऑफिस में सकारात्मक ऊर्जा के लिए वास्तु उपाय

लोग अक्सर घर या ऑफिस बनवाते समय वास्तु का ध्यान नहीं रखते, जिसके परिणामस्वरूप अनेकों उपायों के बाद भी सफलता नहीं मिलती। ऐसे में सरल वास्तु यंत्र या उपाय से आप अपने घर या ऑफिस में सुधार ला सकते हैं। इससे आपको अपने घरों में ज्यादा बदलाव नहीं लेने पड़ेंगे, साथ ही वास्तु दोष भी दूर हो जाएंगे। घर व ऑफिस में सकारात्मक ऊर्जा का संचालन बना रहे, इसलिए इन बातों का विशेष ध्यान रखें।

• घर का मुख्य द्वार दक्षिण व पश्चिम दिशा में नहीं होना चाहिए। अगर ऐसा है तो दरवाजे के बाहर हनुमान जी की टाइल या फोटो लगा सकते है।

• मंदिर या पूजा घर उत्तर-पूर्वी दिशा में स्थापित होना चाहिए। पूजा करते समय आपका मुख पूर्व दिशा की ओर

होना चाहिए, ऐसा करने से घर में सुख-शांति बनी रहेगी।

• रसोई घर दक्षिण-पूर्वी दिशा में होना चाहिए। किसी और दिशा में होने के कारण आर्थिक व स्वास्थ्य संबंधित परेशानियां बनी रहती हैं।

• घर के मुख्य कमरे को साफ-सुथरा रखना चाहिए? क्योंकि वहां आप सबसे ज्यादा समय रहते हैं। घर के आंगन में हमेशा रोशनी रखनी चाहिए। इससे नकारात्मक ऊर्जा दूर रहती है।

• घर में किसी भी दिशा में दरारें नहीं होनी चाहिए। ऐसा होने से घर में हमेशा बीमारी व झगड़े होते रहते हैं। अगर शीशा है भी तो पर्दे से ढ़क कर सोयें।

• आप मुख्य द्वार पर स्वास्तिक भी बना सकते हैं, जिससे घर में हमेशा सुख-शांति व स्थायी आर्थिक स्थिति बनी रहेगी। स्वास्तिक के साथ आप ॐ भी लिख सकते हैं।

• आप बुरी शक्तियों को दूर भगाने के लिए एक ग्लास पानी में नींबू काटकर रख सकते हैं। इस पानी को आप हर शनिवार बदलें व नियमित रूप से दोहराएं।

• घर में सुबह-शाम रोज दीया और अगरबत्ती जलाएं। इससे बुरी शक्तियों दूर होंगी और घर में शुद्धता का संचार होगा।

• आप समुद्री नमक युक्त पानी से स्नान कर सकते हैं, जो आपके शरीर से नकारात्मक ऊर्जा और विचारों को मुक्त कर देगा।

-संकलित

दादी मां का समझदार मोती

मोती एक शिकारी कुत्ता था। पतला-दुबला, लंबा, देखने में जरा भी खूबसूरत नहीं लगता था। पर उसकी आंखें बड़ी-बड़ी थीं। हमेशा प्यार से चमकती रहती थीं। दादी को वह बहुत प्यार करता था। दादी भी उसे बहुत चाहती थीं। दादी गांव में रहती थीं। परिवार बड़ा था। मकान भी बहुत बड़ा था और गांव में उन दिनों डाकू भी खूब आते थे।

रात को अकसर कहीं न कहीं डाका पड़ ही जाता था। इसीलिए लोग कुत्ते पालते थे। शिकारी कुत्ता डाकुओं को देखते ही पहचान लेता था। फिर तो वह खतरनाक हो उठता था। उसके हमले से बचना कोई मामूली बात नहीं थी। यही कारण था कि मोती की घर में बहुत पूछ होती थी। वह सबका प्यारा था।

वह घर में किसी आदमी पर कभी हमला नहीं करता

था। प्यार इतना करता था कि लोग परेशान हो जाते। वह गांव, गंगा नदी से कुछ ही दूर था। कार्तिक के महीने में वहां बड़ा मेला लगता था। दादी हर साल उस मेले में हम सब बच्चों को भी लेकर जाती थीं। उनकी रखवाली के लिए मोती भी जाता था। बच्चों को वह खूब पहचानता था। उनका दोस्त जो बन गया था। एक बार ऐसा हुआ कि मोती उस मेले में गायब हो गया। बहुत ढूंढ़ा, लेकिन कहीं पता नहीं लगा। किसी ने कहा कि उस पार चला गया है, उसने उसे नदी में घुसते देखा था। मेला खत्म हो गया, लेकिन मोती नहीं आया। हमने समझ लिया कि कोई उसे पकड़कर ले गया है या वह नदी में डूब गया है। सभी बहुत दुखी थे, लेकिन दादी के दुख की मत पूछो। रोत-रोते उनकी आंखें लाल हो गईं। सब लोग लौट आए। रुकते भी कब तक!

फिर बहुत दिन बीत गए। शायद तीन महीने बाद की बात है। जाड़े के दिन थे। अचानक आधी रात को दरवाजे पर खड़खड़ाहट शुरू हुई। हां, एक बात बताना तो मैं भूल ही गया था। मकान का दरवाजा बहुत बड़ा था और वह लकड़ी का नहीं था, टीन का था। इसलिए जरा सी भी आहट होती, तो बहुत शोर होता था। रात का सन्नाटा था। टीन के दरवाजे पर जो खड़खड़ाहट शुरू हुई, तो सब जाग उठे। समझ गए कि डाकू आ गए हैं। सब डर गए, लेकिन यह क्या? खड़खड़ाहट लगातार हुए जा रही थी। डाकू तो ऐसा

नहीं कर सकते। वे तो एकदम दरवाजा तोड़ देते हैं। कौन है यह? आदमी है, तो आवाज क्यों नहीं देता?

तभी दादी एकदम चिल्ला पड़ीं, ''मेरा मोती आया है।'' सबने दादी की ओर देखा। उनकी आंखों में आंसू थे, लेकिन भला मोती कहां से आता? वह दरवाजा कैसे खड़खड़ाएगा? लेकिन दादी ने तुरंत लालटेन उठाई और दरवाजा खोलने के लिए चल पड़ीं। उन्हें रोकना चाहा, लेकिन वह नहीं रुकीं। अब तो सबको ही पीछे-पीछे चलना पड़ा। भला, उन्हें अकेले कैसे जाने देते। अगर डाकू हुए तो!

बस आगे-आगे हाथ में लालटेन लिए दादी थीं और पीछे थे कोई पंद्रह-बीस औरतें और आदमी हाथों में लाठियां लिए हुए। एक-दो के पास छुरे भी थे। पर डर सब रहे थे। जैसे-जैसे दरवाजे के पास आ रहे थे, एक और आवाज उनके कानों में पड़ रही थी। वह मोती की आवाज थी। हां, हां, यह मोती ही है।

तभी किसी ने तेजी से आगे बढ़कर दरवाजा खोल दिया। सचमुच वह मोती था। दरवाजा खुलते ही वह तीर की तरह लपका और दादी से आ चिपटा। वह पागलों की तरह कभी इस कंधे पर झपटता, कभी उस कंधे पर चढ़ता, कभी मुंह चूमता और कभी अपना सिर उनकी गोद में रख देता। और दादी थीं कि रोए जा रही थीं। बोल रही थीं, ''मेरा मोती, मेरा बेटा मोती, तू कहां गया था रे? मैं तुझे रोज याद करती

थी और जानती थी कि तू एक दिन आएगा।''

मोती केवल दादी से ही नहीं मिला, वह घर के हर सदस्य के पास गया। उनके पास भी गया, जो अभी तक सोए पड़े थे। सबके साथ उसने वैसा ही प्यार दिखाया। वह रात कब बीती, कब सवेरा हुआ, किसी को पता नहीं चला। लेकिन यह बात सभी जानते हैं कि अगले दिन दादी ने देवी के मंदिर में प्रसाद चढ़ाने के बाद सबको दो-दो पेड़े दिए थे। पूरे एक हफ्ते तक मोती की जो आवभगत हुई थी, उसकी चर्चा तो बच्चे बड़े हो जाने पर भी किया करते थे।

लेकिन यही मोती एक दिन पागल हो गया। गांव में डाकू आते थे, तो गीदड़ भी आते थे। मोती अकसर उन गीदड़ों को मार भगाता था। कभी-कभी गीदड़ भी उसे काट लेते थे।

एक दिन उन गीदड़ों में शायद कोई पागल गीदड़ भी आ गया था। उसी ने मोती को काट लिया और मोती पागल हो गया। उसके मुंह से बराबर राल टपकने लगी। उसकी आंखों का रंग बदलने लगा, लेकिन उसका प्यार अब भी कम नहीं हुआ था। अब लोग उससे डरते थे। दादी भी डरती थीं, रोती थीं। जिसे वह इतना प्यार करती थीं, उसे अब गोद में नहीं ले सकती थीं। मोती ने अभी तक किसी को काटा नहीं था, लेकिन काट तो सकता था। पागल कुत्ते चुपचाप काट लेते हैं। भौंकते तक नहीं। मोती ने किसी को काट लिया तो! पागल कुत्तों के काटने का उन दिनों कोई

इलाज भी नहीं था। इसीलिए लोगों ने कहा, ''मोती को मार डालो।'' कैसी बुरी सलाह थी। दादी रोने लगीं। सब लोगों के दिल भर आए, लेकिन और कोई रास्ता भी तो नहीं था। मोती को मारना ही होगा।

फिर भी दो-तीन दिन बीत गए। इसी बीच में क्या हुआ कि घर का एक छोटा बच्चा अकेला सड़क पर निकल आया। वह धीरे-धीरे बाजार की ओर चल पड़ा। शाम का वक्त था। बैलगाड़ियां आ-जा रही थीं। अचानक एक गाड़ी के बैल भड़क उठे। वे तेजी से दौड़ने लगे। उनके ठीक सामने ही वह बच्चा चल रहा था। लोगों की निगाह उस पर पड़ी। वे चिल्लाए, ''बच्चे को बचाओ, बच्चे को बचाओ।''

दौड़ते बैलों को रोकना आसान काम नहीं था। एकाएक कोई आदमी सामने नहीं आया। लेकिन मोती यह सब देख रहा था। वह तेजी से झपटा। पहले जब कभी ऐसा होता था, तो मुंह से कपड़ा पकड़कर खींच लेता था और बच्चे को सड़क से दूर ले जाता था, लेकिन अब तो वह पागल था। देखने वाले डर गए। कहीं उसके दांत बच्चे के बदन में गए तो।

लेकिन हुआ क्या? मोती तेजी से झपटा और उसने अपनी पीठ से धक्का देकर, बच्चे को सड़क से बाहर धकेल दिया। उसे मुंह से नहीं पकड़ा। लोगों ने यह सब देखा, तो अचरज से दांतों तले उंगली दबा ली। सब कहने लगे, ''इतना समझदार कुत्ता! बीमार है, फिर भी बच्चे को बचा लिया।''

-साध्वी वसुमति

मानव मंदिर है सगलां रो

○ साध्वी कनकलता

घुंघुंरू छम छमा छम छऽऽऽऽऽऽऽऽऽऽ
बाजै रे बाजै रे
मानव मंदिर रो उत्सव है खुशियां मनावा रे
वार्षिक उत्सव आज मनावां झालर बाजै रे
आपां शंख बजावां रे
आपां हर्ष मनावां रे
आपां ढ़ोल बजावां रे
घुंघुंरू छम................

(1)
मानव मंदिर है सगलां रो लागै सबनै प्यारो
इण में रहकर जीवन बणावां डंको बाजे न्यारो
ओ है सद्गुणां री खान
बढ़ती जावै इणरी शान
म्हें करां घणां गुण गान

(2)
मानव मंदिर गुरूवर रो सपनों है
एक निरालो
मानव बण ज्यावै मंदिर ओ नई रोशनी वालो
इण रो मान बढ़ावां रे
ज्ञान रा मोती पावां रे

आगै बढ़ता जावां रे
इसकी ज्याति जलावां रे
(3)
देश विदेशां री धरती पर मानव मंदिर चमक्यो
महावीर रो ले सन्देशो सत्य मार्ग पर बढ़ग्यो
गुरूवर घणां सुहावै रे
ज्ञान घणो ही पावै रे
इत्ता सरल कियां हो जावै रे
नहीं अभिमान लखावै रे
(4)
मंद मंद मुस्कान आपरी लागै सबनै प्यारी
प्रवचन सुण अन्तर मन की गांठां खुलज्यासारी
म्हे मनड़ों खोल दिखायां रे
म्हे कित्ता थानें चावां रे
म्हे सगला नै समझावां रे हिलमिल सागै चालां रे
(5)
महावीर सी समता करुणा गौतम बुद्ध सी पाई
नानक गांधी राम कृष्ण की छवि आप
में आई
म्हे तो नरज उतारां रे
म्हे थुथकारो घालां रे
जुग-जुग जीओ आपजी रे
घुंघरू छम छमा छम.....

स्वस्थ शरीर बनाए रखने के लिए खाएं हरी सब्जियां

एक स्वस्थ शरीर का मालिक होने के लिए व्यक्ति को नित्य प्रति कम से कम 300 ग्राम सब्जी का सेवन अवश्य करना चाहिए। सर्दियों में खनिज लवण, कार्बोहाइडेट, विटामिन तथा प्रोटीन इत्यादि महत्वपूर्ण तत्वों को बड़ी सहजतापूर्वक हासिल कर लेते हैं, जो एक स्वस्थ शरीर हेतु बेहद अनिवार्य होता है। आइए जानते हैं कुछ ऐसी ही सब्जियों के बारे में।

पालक- इसकी सब्जी अमूमन शीतल, रेचक, एवं शीघ्र पचने वाली होती है। यूं तो पालक को आलू के साथ मिलाकर खाया जाता है परंतु यदि आप इसमें आलू के स्थन पर पनीर का प्रयोग करते हैं तो इसकी पौष्टिकता बढ़ जाती हैं। इसमें विद्यमान खनिज तत्व, पोटेशियम, कैल्शियम एवं लोहा व्यक्ति के शरीर को बलिष्ठ बनाने खूब मदद

जैसे-जैसे ठंड नजदीक आने लगती है वैसे-वैसे लोगों का मन हरी सब्जियों को खाने हेतु मचलने लगता है। निःसंदेह, शरीर को स्वस्थ एवं सुंदर बनाये रखने के लिए संतुलित भोजन में हरी सब्जियों का मौजूद होना बेहद जरूरी है।

करता है।

बथुआ- हरी सब्जियों के अंदर बथुआ की पैठ भी कुछ कम नहीं होती है। सरसों और पालक को मिश्रित करके बनाने से एक अच्छी डिश तैयार की जा सकती है। जिस व्यक्ति को कम भूख लगने की बीमारी, वह इस सब्जी का अधिक मात्रा में सेवन कर लाभ उठा सकता है।

मेथी- चिकित्सकों की राय में मेथी एक पौष्टिक, वातनाशक, पेचिश व दस्त को विराम लगाने में अव्वल होती है तथा खूनी बवासीर, मधुमेह नाशक होती है। इसलिए शीतकालीन दिनों में गर्मी उत्पन्न करन के लिए मेथी का अवश्य प्रयोग करें।

हरा प्याज- हरा प्याज बलवर्धक, पाचक, कफ एवं ज्वरनाशक होता है। वस्तुतः इसका बहुत अधिक इस्तेमाल किया जाना चाहिए, तभी विटामिन 'सी' की मात्रा को पूरा किया जा सकता है और अधिक से

अधिक फायदा उठाया जा सकता है।

मूली– वैसे तो हरी सब्जियों में मूली की तासीर ठंडी पाई जाती है। आप बवासीर, पीलिया रोग में इससे फायदा उठा सकते हैं। यह आंतों के लिए एंटीसेप्टिक का काम करता है। इसकी हरी पत्तियों और सफेद जड़ों से विटामिन 'ए' प्राप्त किया जा सकता है।

शलजम– शलजम को यूं तो खून स्वच्छ करने हेतु अमल में लाया जाता है किंतु आप इसे सलाद के रूप में भी प्रयोग कर सकते हैं। यही नहीं, शलजम को कच्चा अथवा पका, दोनों रूपों में उपयोग में लाया जा सकता है। इस प्रकार स्वस्थ शरीर हासिल करने वाले लोगों के लिए शलजम एक अच्छा विकल्प हो सकता है।

मटर– वैसे तो मटर के दानों की मिठास किसी से छिपी नहीं है। इसके बावजूद पोषक तत्वों को दिलाने में यह हमारी खासी मदद करता है। यह मोटापावर्धक और रक्तशोधक और पित्त से उत्पन्न होने वाली जलन से काफी आराम पहुंचाता है। मटर के पतले दाने कच्चे खाना भी लाभप्रद होता है।

–अरुण योगी

मासिक राशि भविष्यफल- जनवरी 2019

○ डॉ. एन. पी. मित्तल, पलवल

मेष- मेष राशि के जातकों के लिये यह माह व्यापार-व्यवसाय की दृष्टि से देखें तो आय सामान्य रहेगी। तथा व्यय अधिक रहेगा। व्ययाधिक्य के कारण मानसिक चिंता रहेगी। सत्संग, उपासना आदि लाभप्रद रहेंगे। स्वास्थ्य की दृष्टि से यह माह सामान्य रहेगा। पत्नी तथा संतान के स्वास्थ्य के प्रति सचेत रहें।

वृष- वृष राशि के जातकों के लिये व्यापार-व्यवसाय की दृष्टि से यह माह पूर्वार्द्ध में अच्छा नहीं हे। विरोधी पक्ष कार्यों में रूकावट डालेगा। जिन्हें आप अपना समझते है वे ही अंदर खाने आपका विरोध कर सकते हैं। उत्तरार्ध में स्थिति में सुधार आयेगा। आत्मविश्वास की वृद्धि होगी नई योजना बनेंगी। विरोधियों पर काबू पाने में आप सक्षम होंगे।

मिथुन- मिथुन राशि के जातकों के लिये व्यापार-व्यवसाय की दृष्टि से यह माह पूर्वार्द्ध में अच्छा है। कार्यों में सफलता मिलेगी, किन्तु उत्तरार्ध में व्यर्थ के वाद विवाद होंगे तथा आय पर भी विपरीत असर पड़ेगा। हां अचानक कोई लाभ की स्थिति आ सकती है। समाज में यश, मान, प्रतिष्ठा बनी रहेगी। किसी पुराने केस के निपटारे से खुशी मिलेगी।

कर्क- कर्क राशि के जातकों के लिये व्यापार-व्यवसाय की

दृष्टि से यह माह कुल मिलाकर अच्छा रहेगा। सामान्यतः लाभ देने वाला है। मित्र बंधु मददगार रहेंगे। कोई पिछला रूका हुआ पैसा भी इस माह मिल सकता है जिससे मानसिक चिंता दूर होगी। हां प्रेम संबंधों में दरार आ सकती है। स्वास्थ्य के प्रति सचेत रहें।

सिंह- सिंह राशि के जातकों के लिये यह माह व्यापार-व्यवसाय की दृष्टि से सामान्य फलदायक है। घर के झंझटों से ही फुर्सत नहीं मिलेगी। किसी का आप भला करना चाहेंगे तो भी बुराई ही मिलेगी। बिन मतलब के किसी के मामले में दखल न दें। जब आपको कुछ न सूझे तो बुजुर्गो की सलाह अवश्य लें।

कन्या- कन्या राशि के जातकों के लिये व्यापार-व्यवसाय की दृष्टि से यह माह पूर्वार्द्ध में लाभ देने वाला है तथा उत्तरार्ध में सामान्य फल देने वाला है। परिश्रम साध्य फल देने वाला है। कोई शुभ कार्य आपके हाथों से हो सकता हैं। बंधु-मित्र आपके शुभ कार्यों में आपका साथ देंगे। तर्क-वितर्क से बचें। कुछ जातकों की विदेश यात्रा भी हो सकती है किंतु यात्रा सफल होने में शंका है।

तुला- तुला राशि के जातकों के लिये यह माह व्यापार-व्यवसाय की दृष्टि से लाभालाभ की स्थिति लिये रहेगा। अनावश्यक रूप से किसी स्कीम में पैसा न लगाएं। नुकसान हो सकता है। विरोधी तत्वों के सक्रिय रहने से मानसिक

परेशानी रहेगी। हां सरकारी कर्मचारी अचानक लाभ की आशा कर सकते है। परिवार में कोई धार्मिक अनुष्ठान हो सकता है।

वृश्चिक- वृश्चिक राशि के जातकों के लिये यह माह व्यापार-व्यवसाय की दृष्टि से अधिक आर्थिक लाभ की उम्मीद नहीं की जा सकती। इस संबंध में की जाने वाली यात्राएं भी शुभफल नहीं दे पायेंगी। आपसी मन मुटाव तथा कोर्ट-कचहरी की नौबत न आने दें। अपने बुजुर्गों को सम्मान दें तथा उनकी सलाह से काम करें। दाम्पत्य जीवन में सामन्जस्य बनाए रखें।

धनु- धनु राशि के जातकों के लिये व्यापार-व्यवसाय की दृष्टि से यह मास परिश्रम साध्य लाभ लिये होगा। अपनी शक्ति से अधिक न तो कार्य करें और न ही अनावश्यक रूप से किसी स्कीम में धन लगाए। यही श्रेयस्कर रहेगा। आवश्यकता से अधिक किसी पर भी विश्वास न करें। मौका पाकर अपने ही धोखा दे सकते हैं। छोटी-बड़ी यात्राये होंगी जो श्रेयस्कर रहेगी। किन्हीं सरकारी कर्मचारियों का पदोन्नति का योग बनेगा।

मकर- मकर राशि के जातकों के लिये यह माह व्यापार-व्यवसाय की दृष्टि से अन्य लाभ वाला होगा। वर्तमान में जीएं। बीती बातों को स्मरण करके परेशान होने के अलावा कुछ हासिल नहीं होगा। नये आगन्तुकों से मेल

मिलाप में सावधानी बरतें। परिश्रम से जी न चुरायें तो अच्छा फल मिलेगा। कोई नई योजना बनेगी जिसका क्रियान्वयन आगे होगा।

कुम्भ– कुम्भ राशि के जातकों के लिये व्यापार-व्यवसाय की दृष्टि ये यह माह आय से अधिक खर्च वाला रहेगा। व्यस्तता अधिक रहेगी। योजना तो कई बनेंगी किंतु उनको कार्यरूप में परिणित नहीं किया जा सकेगा। किसी अज्ञात भय के कारण मानसिक परेशानी बनेगी। शत्रु सिर उठायेंगे, किंतु वे अपना ही नुक्सान कर बैठेंगे।

मीन– मीन राशि के जातकों के लिये यह माह व्यापार-व्यवसाय की दृष्टि से अधिक मेहनत करने के पश्चात भी अन्य लाभ वाला होगा। वातावरण ऐसा बनेगा कि मानसिक चिंता बनी रहेगी। कार्य पूरा होने की आशा बनेगी पर कार्य पूर्ण नहीं होगा। व्ययाधिक्य के कारण ऋण लेने की स्थिति भी आ सकती है। कोई लंबी यात्रा का योग भी बन सकता है। स्वास्थ्य के प्रति सचेत रहें। समाज में अपकीर्ति का भय है।

जैन समाज हर मंदिर/स्थानक के साथ शिक्षा, सेवा और योगाभ्यास को जोड़े

○ *आचार्यश्री रूपचन्द*

दो दिसम्बर, 2018 रविवार, मानव मंदिर मिशन के 37वें वार्षिकोत्सव पर उपस्थित विशाल जन-समुदाय को संबोधित करते हुए जैन आश्रम मानव मंदिर परिसर, नई दिल्ली में पूज्य आचार्यश्री रूपचन्द्रजी ने कहा- आज जैन समाज हर वर्ष मंदिरों तथा स्थानकों के भव्य निर्माण तथा पूजा-प्रतिष्ठाओं पर करोड़ों-करोड़ों रूपये खर्च कर रहा है। अपने-अपने आचार्यों तथा महामुनियों के चातुर्मासिक आयोजनों/उत्सवों पर करोड़ों-अरबों के वारे-न्यारे कर रहा है। इन सब आयोजन-प्रदर्शनों से अगर समाज पूर्णतया सहर्ष सहमत है तो मुझे इस पर कोई टिप्पणी नही करना है। मेरा तो समाज से इतना ही विनम्र निवेदन है कि जैन मंदिरों/स्थानकों तथा आचार्यों/महामुनियों के वैभवपूर्ण आयोजनों के साथ जन-साधारण के सुख-दुःख से जुड़ी हुई समस्याओं के निराकरण करने वाले शिक्षा, सेवा और योगाभ्यास प्रकल्पों को भी जोडे। गरीब, बेसहारा, अनाथ बच्चों के लिए निःशुल्क विद्यालय चलायें। गरीब लाचार असमर्थ रोग-ग्रस्त लोगों के लिए निःशुल्क औषधालय खोलें। वृद्ध असहाय माताओं की सम्मानपूर्ण सुध-बुध लें। अस्वस्थ तनाव-ग्रस्त आज की जीवन-शैली में स्वस्थ शांत

तनाव मुक्ति के लिए योग-ध्यान की नियमित कक्षाओं/शिविरों का आयोजन करें। यदि हमारे मंदिर/स्थानक/भवन इन जन-कल्याणकारी कार्यक्रमों को अपनी पूजा-प्रतिष्ठाओं तथा धर्म-आराधना के साथ जोड़ेंगे, तभी हम जन-जन के साथ जुड़ पाएंगें। तभी हम जैन-धर्म को जन-धर्म बना सकेंगें। आज जैन-समाज की छवि धन-प्रदर्शन प्रिय समाज की बनकर क्या नहीं रह गहे है? क्या जैन समाज अपने धार्मिक तथा सामाजिक उत्सवों तथा समारोहों पर अंधाधुंध प्रदर्शन नहीं करता है?

एक दर्द भीतर ही भीतर कसक-कसक उठ आता है
नाम रोशनी का लेकर अंधेरा लाभ उठाता है
जन्म-जयंती समारोह की चमक-दमक में ये नेता
कोई दाम कमाता है और कोई नाम कमाता है।

इन सब वैभव आडम्बरपूर्ण आयोजनों का कुछ प्रतिशत भी जन-कल्याण कार्यों पर लगाया जाए तो जैन-धर्म को जन-धर्म बनने से कोई नहीं रोक सकता। जब शिक्षा के लिए गरीब बेसहारा बच्चे मंदिर/स्थानक से जुडेगें, जब रोग-मुक्ति के लिए गरीब असमर्थ लोक मंदिर/स्थानक से जुडेगें इसका अर्थ होगा वे स्वयं ही जैन समाज से जुड़ जायेंगें। मेरा विश्वास है जैन समाज मेरे इस विनम्र निवेदन पर अवश्य गौर करेगा। आपने कहा- मानव मंदिर मिशन इसी शिक्षा, सेवा और योग-साधना की अवधारणा पर पिछले

सैंतीस वर्षों से कार्यरत है। मुझे प्रसन्नता है बीज रूप से आरंभ होकर आज इस मिशन ने देश-विदेश के उदार मना व्यक्तियों के सहयोग से घटादार वृक्ष का रूप ले लिया है।

गुरूकुल की बालिकाओं के मंगल मंत्रों के साथ दीप-प्रज्ज्वलन के पश्चात् यशस्वी कवि युगराग जैन (मुम्बई) ने अपने संयोजकीय वक्तव्य में मिशन के उद्देश्यों पर प्रकाश डाला। पूरे देश से समागत अतिथियों- श्रीमान् महेन्द्रसिंह डागा (जयपुर), श्रीमान् महावीर प्रसाद जैन (चेन्नई), श्रीमान् सोहनराज खजांची (मुम्बई), प्रवचनकार सुश्री तरला बेन दोषी (मुम्बई), डॉ. रिखव चन्द्र जैन (दिल्ली), श्रीमान् सलेकचन्द्र जैन कागजी (दिल्ली), श्रीमती ताजदार बाबर (दिल्ली) आदि का अंगवस्त्रम् द्वारा सम्मान गुरूकुल के वरिष्ठ छात्र-छात्राओं ने किया। इस प्रसंग पर गुरूकुल की छात्राओं द्वारा मधुर गीत तथा विविध भाव-भंगिमा में गुरू-गाथा का संगान एवं नवकार-महामंत्र तथा भगवत्-गीता पाठ पर अपना हर्षोल्लास उपस्थित जन-समुदाय ने बार-बार करतल-ध्वनि से किया। नन्हें बालक-बालिकाओं द्वारा 'बेटी बचाओ बेटी बढ़ाओ' पर पस्तुत नृत्य-नाटिका खूब सराही गई। गुरूकुल के छात्रों द्वारा प्रस्तुत आकर्षक योगासन-प्रदर्शन ने जन-समुदाय के दिलों को जीत लिया। साध्वी समताश्रीजी ने गुरूकुल की उपलब्धियों के साथ भावी योजना की जानकारी दी। अरुण

योगी ने देश-विदेश में चल रहे योग-शिविरों तथा सेवा-कार्यों पर प्रकाश डाला।

पूज्या प्रवर्तिनी महासती मंजुलाश्रीजी के आशीर्वचन के पश्चात समारोह के प्रमुख अतिथि भोजपुरी फिल्म-जगत के अमिताभ सांसद श्री मनोज तिवारी ने कहा- मानव मंदिर गुरूकुल के बालक बालिकाओं द्वारा प्रस्तुत सांस्कृतिक प्रस्तुतियों तथा अद्‌भुत योग-प्रदर्शनों को देखकर मैं आश्चर्य चकित हूं। पूज्य गुरूदेव के मार्ग-दर्शन में यहां सचमुच ही उन्नत संस्कारों तथा ऊंची शिक्षा युक्त नए मानव का निर्माण हो रहा है। अत्यंत व्यस्तता के बीच यहां उपस्थित होकर मैं अपना सौभाग्य समझता हूं। मैं वादा करता हूं जब भी आप मुझे बुलायेंगे, मैं आऊंगा, अपने को धन्य समझूंगा। विधायक श्री प्रवीण कुमार ने कहा- मेरे क्षेत्र में इतना प्रेरणादायी सेवा/शिक्षा उपक्रम चल रहा है, मैं हृदय से स्वागत करता हूं। मेरा संपूर्ण सहयोग सदैव रहेगा। इस समारोह में मानव मंदिर, सुनाम, पंजाब के पदाधिकारी-गण विशेषतः उपस्थित थे। सबने मिलकर पूज्य गुरूदेव का शालार्पण द्वारा सम्मान किया। मानव मंदिर हिसार का प्रतिनिधित्व श्री नरेन्द्र जी मधु तायल, श्री विनोदजी कुसुम बहिन, नवभारत आयल मिल तथा श्री अशोक जी शशि बहिन अग्रवाल ने किया। यशस्वी कवि श्री युगराज जैन ने अपने कवितामय संयोजन से समारोह में चार चांद लगा

दिये। समारोह के पश्चात् सुव्यवस्थित तथा सात्विक मधुर प्रसाद का जन-समुदाय से भरपूर आनंद लिया। सबके मुख पर मानव मंदिर मिशन की प्रगति-शिखरों को छूनेवाली शिक्षा-सेवामयी प्रवृत्तियों की चर्चा थी।

केवल तुम नही हो! पुस्तक पर समीक्षा-गोष्ठी

17 दिसम्बर, 2018 केन्द्रीय साहित्य अकादमी, रवीन्द्र भवन, नई दिल्ली के सभागार में पूज्य गुरूदेव का नया कविता-संग्रह- केवल तुम नहीं हो! - पर समीक्षा-गोष्ठी आयोजित की गई। सुप्रतिष्ठित साहित्यकार डॉ. रामदरश मिश्र ने अपने अध्यक्षीय भाषण में कहा- इस संकलन में चुने हुए मुक्तक, कवितायें एवं गजलों का समावेश है। मैं कह सकता हूं तीनों ही प्रकार के काब्य-छन्द निर्दोष तथा प्रभावी रूप से प्रस्तुति हुई है। इसके साथ ही सरल ओर सटीक शब्दों से ये कवितायें हृदय की गहराइयों में सहजकता उतर जाती है। प्राचीन संत-कवियों की कोटि में मुनिजी की असंदिग्ध रूप से सम्मान्य स्वीकृति में रखा जा सकता है। यशस्वी साहित्यकार प्रो. गंगाप्रसाद विमल ने कहा- मुनि रूपचन्द्र भारतीय संत-पुरुषों के बीच अपनी क्रांतिकारिता के लिए पर्याप्त चर्चा में रहे हैं। वे धर्म के ठेकेदारों के विरूद्ध आवाज उठाने में सबसे अग्रणी रहे हैं। यह कदाचित एक खुला रहस्य है कि आस्था का बाजारीकरण हो चुका है। मुनिजी ने सहज संप्रेष्य भाषा में संत कबीर की तरह

मानवीय संवेदनाओं को गंभीरता से प्रस्तुत किया है। प्रख्यात साहित्यकार प्रो. विश्वनाथ त्रिपाठी ने कहा- साधना और कविता में कोई अन्तर्विरोध नहीं है। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने कविता को भाव-योग कहा है। मुनि रूपचन्द्र की कविताएं उसी भाव-योग भूमिका पर प्रस्फुटित हुई है। राज्य-सभा टी.वी. के अरविन्द कुमार सिंह ने कहा- मुनि रूपचन्द्र की कवितायें संत कबीर परंपरा का विस्तार है। सभी कवितायें समाज को केन्द्र में रखकर लिखी गई है। और समसामयिक विसंगतियों पर चोट की गई है।

यशस्वी कवि-कथाकार प्रो. फूलचन्द मानव ने जोर देकर कहा- प्राचीन संत-कतियों की रचनाओं की तरह मुनि रूपचन्द्र की कविताओं को समावेश विद्यालयों की पाठ्य-पुस्तकों में होना चाहिए। साहित्य अकादमी हिन्दी संपादक कुमार अनुपम ने संकलन में से कुछ कविताओं का पाठ किया। श्री वृजेन्द्र त्रिपाठी, श्री विष्णु सक्सेना, श्री संपतराय चौधरी, डॉ. विनीता गुप्ता, श्री वैवाक जौनपुरी, डॉ. कमल कुमार, श्री अरूण पांडे आदि अनेक नामचीन साहित्यकारों ने अपनी सारगार्भित समीक्षाएं प्रस्तुत की। पूर्व निदेशक- दूरदर्शन, डॉ. गौरीशंकर रैना ने सरस संयोजन किया। आचार्यश्री रूपचन्द्र ने कुछ मुक्तकों, कविताओं तथा गजलों का पाठ किया, जिसे उपस्थित साहित्य-मनीषियों ने खूब सराहा। साहित्य-अकादमी सभागार में किसी पुस्तक

समीक्षा-गोष्ठी में इतने सुविख्यात साहित्यकारों का जमावड़ा विशेष चर्चा का विषय रहा। गोष्ठी को सफल बनाने में अरूण योगी तथा श्रुति प्रकाशन के तरूण पचौरी का विशेष सहयोग रहा।

पूज्य गुरूदेव की पंच-दिवसीय गुजरात-यात्रा

पूज्य गुरूदेव की 19 दिसम्बर से 24 दिसम्बर 2018 की पंच-दिवसीय गुजरात-यात्रा में प्रमुख निमित्ततीथल-बडसाड में भगवान पार्श्वनाथ पद्मावती मंदिर का दसवां वार्षिकोत्सव तथा यशस्वी बंधु त्रिपुटी प्रखर प्रवचनकार श्री जिनचन्द्रजी महाराज साहेब का 72वां जन्म-जयंती समारोह बना। यशस्वी बंधु-त्रिपुटी श्री मुनिचन्द्रजी, श्री कीर्तिचन्द्रजी तथा श्री जिनचन्द्रजी महाराज से पूज्यवर का निकट आत्मीय संपर्क सन् 1991, आदरणीय आचार्यश्री सुशील कुमारजी द्वारा अमेरिका में संस्थापित सिद्धाचलम् तीर्थ के मूर्ति-प्रतिष्ठा समारोह के अवसर पर हुआ। आपने अपने स्नेह-सौहार्द के सूत्र में पूज्यवर को सदा के लिए बांध लिया। मूर्ति-पूजा परंपरा के बारे में पूज्यवर को आषसे बहुत कुछ जानने/समझने को मिला। भारत में आदरणीयश्री जिनचन्द्रजी महाराज तीथल, बलसाड़ में शांति-धाम आराधना केन्द्र में भक्ति-मार्ग से जुड़ी विविध प्रवृत्तियों का संचालन करते हैं, वहीं शांति-निकेतन योग-केन्द्र में आदरणीय भी कीर्तिचन्द्रजी महाराज योग-साधना के विविध

कार्यक्रमों का मार्ग-दर्शन करते हैं।

इस बर्ष आदरणीय श्री जिनचन्द्रजी महाराज जब अमेरिका-यात्रा पर थे, अचानक गिर जाने से आपको काफी चोटें आई। दो-दो बार गहन शल्य-चिकित्सा में से गुजरना पड़ा। जब से पूज्य गुरूदेव ने यह सब सुना, तब से आपके मन में सुख साता-पृच्छा के लिए महाराज साहेब से मिलने की तीव्र अभिलाषा थी। संयोग से मंदिर का दसवां वार्षिकोत्सव तथा महाराज साहब की 72वां जन्म-जयंती समारोह का प्रसंग सहजतया बन गया।

इस अवसर पर अपने हृदय के उद्‌गार प्रकट करते हुए पूज्य आचार्यवर ने कहा- साधु कौन? असाधु कौन? इसका उत्तर लगभग अपने पंथ/संप्रदाय के परिप्रेक्ष्य में मिलता है। लेकिन भगवान महावीर ने इसके उत्तर में कहा- सुत्ता अमुणि, मुणिणो सया जागरंति- जो आत्म-रमण में जागृत है, वह साधु है। जो आत्म-रमण में सोया हुआ है, वह असाधु है। इस दृष्टि से मैं बन्धु त्रिपुटी को जागृत संत मानता हूं। मैंने निकटता से देखा है, ज्येष्ठ बंधु श्री मुनिचन्द्रजी महाराज आत्म-स्पर्शी शायरी में जागृत थे। श्री कीर्तिचन्द्रजी महाराज ध्यान-योग-निष्ठा में जागृत है। श्री जिनचन्द्रजी महाराज अपनी प्रखर प्रवचन-गंगा में हजारों-हजारों साधकों को डुबो देते हैं। आज इस प्रेरणादायी प्रसंग पर मेरी यही मंगल कामना है आप

आरोग्यपूर्वक शतायु हों। आपकी आत्म-यात्रा निरंतर निर्वाण-पथ पर अग्रसर हो। आपके मार्ग-दर्शन में साधक-जन भक्ति-आराधना के शिखरों को छूएं।

मैं इस पावन अवसर पर उपस्थित होकर अपने को गौरवान्वित महसूस करता हूं। मुनिचन्द्रजी महाराज अब हमारे बीच नहीं हैं। आप दोनों ने जो प्रेम और सम्मान दिया है, वह सदा अविस्मरणीय रहेगा। पूज्यवर के साथ शिष्य अरूण योगी तथा गुरूकुल छात्र मनीष ने भी भक्ति रस भीने वातावरण का खूब आनंद लिया। मुमुक्षु अमित भाई तथा केवल भाई की सराहनीय सेवायें मिलीं।

सूरत शहर में दो दिवसीय प्रवास

तीथल, बलसाड़ यात्रा के बीच सूरत शहर का कार्यक्रम अनायास ही बन गया। क्योंकि दिल्ली-सूरत के बीच वायुयान-यात्रा चालू हो गई है। सूरत प्रवासी श्री गुलाबचन्द्रजी बरडिया परिवार तथा श्रीमती मंगलीबाई, हंसराज जी बुच्चा परिवार ने जब पूज्य गुरूदेव के शुभागमन के बारे में सुना, उनकी खुशियों का कोई पार नहीं था। बरडिया परिवार तथा बुच्चा परिवार मानव मंदिर मिशन के सेवा-प्रकल्पों के साथ तन-मन-धन से जुड़े हुए हैं। विशेष यह है सेवाभावी साध्वी कनकलताजी की संसारपक्षीय बड़ी बहन श्रीमती मंगलीबाई जी का अस्वस्थता के कारण इन वर्षों दिल्ली मानव मंदिर में आना नहीं हो पा रहा था। इसी तरह आपके संसारपक्षीय बड़े

भाई श्री गुलाबचन्द्रजी की अभिलाषा थी हमारे साथ साध्वी कनकलताजी का भी सूरत आगमन हो। इधर पूज्य प्रवर्तिनी महासती मंजुलाश्रीजी की सेवा-चिकित्सा से दूर जाने का साध्वी कनकलताजी का मन भी नहीं था। इन परिस्थितियों के बीच पूज्या महासती मंजुलाश्रीजी ने साध्वी कनकलताजी को गुरूकुल छात्रा शिखा के साथ सूरत शहर का निर्देश दिया तो पूरा बरडिया परिवार तथा बुच्चा परिवार आनंद सागर में हिलोरें लेने लगा।

सूरत-प्रवास में पूज्य गुरूदेव का एक प्रवचन बुच्चा परिवार के बीच रहा। दूसरा प्रवचन गुलाब-हाउस के हाल में रहा। श्री गुलाबचन्द्रजी बरडिया जयपुर तथा सूरत-समाज में काफी लोकप्रिय है। संयोग से रविवार को ही प्रवचन-कार्यक्रम था। श्री बरडियाजी द्वारा पूज्यवर के प्रवचन की सूचना जैसे ही समाज को मिली, पूरे समाज में हर्ष की लहर दौड़ गई। देखते-देखते पूरा हाल खचाखच भर गया। समाज-सेवी श्री बरडियाजी ने अपने स्वागत-भाषण में कहा- पूज्य गुरूदेव, बहिन महाराज कनकलताजी, श्री अरूण योगी आदि ससंघ आज सूरत शहर में पधारे हैं, इससे हमारे दिलों की खुशियां प्रकट करने के लिए हमारे पास शब्द नहीं है। हम महासती मंजुलाश्रीजी के प्रति बहुत कृतज्ञ हैं जिन्होंने अपनी अस्वस्थता के बावजूद अपनी सेवा-चिकित्सा को नजरअन्दाज करके बहिन महाराज साध्वी कनकलताजी को यहां भेजा है। आज वर्षों पुरानी

हमारी भावनाएं फलवती हो रही है। पूज्य गुरूदेव के प्रति अपना आभार प्रकट करते हुए श्री बरडियाजी ने कहा- आपके मार्ग-दर्शन में चल रहे बेसहारा अनाथ बच्चों का मानव मंदिर गुरूकुल, निःशुल्क स्वास्थ्य सेवा केन्द्र, वृद्ध वेसहारा माताओं के लिए मातृ-सेवा केन्द्र, रूपान्तरण योग-ध्यान शिविर आदि मानव सेवा प्रकल्पों ने देश-विदेश के जन-समाज पर व्यापक प्रभाव छोड़ा है। आपके हृदय-स्पर्शी प्रवचनों/मुक्तकों की चर्चा मुख-मुख पर सुनी जा सकती है। आपके पदार्पण से सूरतवासी समाज अपने को सौभागयशाली मानता है। सूरत-समाज ने पूज्य गुरूदेव का तथा महिला समाज ने साध्वी कनकलताजी का शालार्पण द्वारा सम्मान किया।

पूज्य आचार्यश्री रूपचन्द्रजी ने अपने प्रवचन में कहा- आज तक आपने संत-पुरूषों के प्रवचन खूब सुने हैं। मैं चाहता हूं अपने को सुनने तक सीमित न रखें, किंतु अनुभव-जगत में उतरें। आपकी आत्म-यात्रा परमात्मा की ओर कितनी आगे बढ़ी है, अपना आत्म-निरीक्षण करें। परिवार, पद, यश पंथ संप्रदाय कोई भी परलोक-यात्रा में साथ नहीं देगा। अपनी आत्मा की यात्रा ही आपके अगले जीवन में काम आएगी। करीब डेढ़ घंटे तक भजन, मुक्तक प्रधान आपकी प्रवचन शैली में भाव-विभोर जन-समुदाय जैसे भाव-समाधि में उतर गया था। प्रवचन के पश्चात् शिष्य अरूण योगी के योग-प्रशिक्षण के तत्काल प्रभाव से

जन-समुदाय चमत्कृत था। लोगों के अनुरोध पर रात्रि तथा अगले दिन सवेरे-सवेरे फिर योग-कक्षाएं रखी गई। जैसे-जैसे पूज्य गुरूदेव के शुभागमन के संवाद लोगों तक पहुंचे, सूरत-बिदाई तक लोगों के आने का तांता लगा रहा। सबकी जबान पर शिकायत थी हमें पहले सूचना क्यों नहीं मिली। पुनः सूरत-पदार्पण का शीघ्र कार्यक्रम के लिए सबका भाव भरा अनुरोध था। पूज्य आचार्यवर का संक्षिप्त सूरत-प्रवास बहुत ही प्रभावपूर्ण तथा प्रभावनापूर्ण रहा।

लघु कथा

उस रात सपने में मैं स्वर्ग के फाटक पर खड़ा था। तभी एक धर्माचार्य आया और स्वर्ग के द्वाररक्षक फरिश्ते से बोला- 'मुझे स्वर्ग में प्रवेश मिलना चाहिए। मैं दिन-रात धर्मग्रंथों का स्वाध्याय करता रहा हूं।' उसे उत्तर मिला- 'ठहरो, हम पहले इसकी जांच करेंगे कि तुमने धर्मप्रेम के कारण स्वाध्याय किया, या केवल इसलिए कि वह तुम्हारा पेशा था।' फिर आया एक कर्मकांडी, बोला- 'मैंने बहुत व्रत किये हैं।' उत्तर मिला- 'ठहरो, पहले हम इसकी जांच करेंगे कि तुमने व्रत किस नीयत से किये थे।' अंत में आया एक भटियारा बोला- 'महाराज, जो कोई गरीब थकाहारा राहगीर आता था, उसे मैं सराय में मुफ्त में ठहरा लेता था, दो रोटियां भी दे देता था।' फरिश्ता चुपचाप उठा और उसने स्वर्ग के फाटक भटियारे के लिए खोल दिये।

P. R. No.: DL(S)-17/3082/2018-20
Rgn. No.: DELHIN/2000/2473
Date of Post : 27-28

(1) केन्दीय साहित्य अकादेमी हॉल में-केवल तुम नहीं हो!- पुस्तक समीक्षा-गोष्ठी में वरिष्ठ साहित्यकारों के साथ पूज्य गुरूदेव।
(2) पूज्य बंधु त्रिपुटी जिनचन्द्रजी महाराज के 72वें जन्मोत्सव पर अपनी मंगल कामनाएं देते हुए पूज्य गुरूदेव। पास में बिराजमान हैं पूज्य कीर्तिचन्द्रजी तथा पूज्य जिनचन्द्र जी महाराज। (तीथल बलसाड़, गुजरात)।

(1) गुलाब-हाउस हॉल, सूरत में मंगल-प्रवचन करते हुए पूज्य गुरूदेव। पार्श्व में साध्वी कनकलतीजी महिला समुदाय के साथ।
(2) दिल्ली अल्पसंख्यक अयोग के अध्यक्ष- श्री जफरूल इस्लाम खान, सचिव- श्री करतार सिंह कोचर, सदस्य- अनसतासिया गिल द्वारा सम्मान प्राप्त करते हुए साध्वी समताश्रीजी।

(1) मानव मंदिर लाइब्रेरी हॉल में विज्ञान एवं दर्शन में अन्तर्सम्बन्ध गोष्ठी में अपने विचार प्रकट करते हुए अन्तर्राष्ट्रीय विख्यात डॉ. शेन पाठक। साथ में हैं पदमश्री डॉ. आर.के. ग्रोवर।
(2) गुरूकुल छात्रों द्वारा आश्चर्य-चकित योग-प्रस्तुति।

प्रकाशक व मुद्रक : श्री अरुण तिवारी, मानव मंदिर मिशन ट्रष्ट (रजि.) के.एच.–57 जैन आश्रम, रिंग रोड़, सराय काले खाँ, इंडियन ऑयल पेट्रोल पम्प के पीछे, पो. बो.–3240, नई दिल्ली–110013, आई. जी. प्रिन्टर्स 104 (DSIDC) ओखला फेस–1 से मुद्रित।

संपादिका : श्रीमती निर्मला पुगलिया